अनुवाद

जो जो भी ऐश्वर्ययुक्त, कान्तियुक्त और शक्तियुक्त वस्तु है, उस-उसको तू मेरे तेज के अंश से उत्पन्न हुई जान।।४१।।

तात्पर्य

वैकुण्ठ-जगत् में ही नहीं, प्राकृत-जगत् में भी जो कोई वस्तु ऐश्वर्य अथवा कांति से युक्त हो, उसे श्रीकृष्ण के ऐश्वर्य का अंश-प्रकाश समझना चाहिए। कोई भी विलक्षण ऐश्वर्यमय पदार्थ श्रीकृष्ण के ऐश्वर्य का रूप है।

अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन।
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्।।४२।।

अथवा=अथवा; **बहुना**=बहुत; **एतेन**=इस; **किम्**=क्या प्रयोजन है; **ज्ञातेन**=जानने से; **तव**=तेरा; **अर्जुन**=हे अर्जुन; **विष्टभ्य**=धारण करके; **अहम्**=मैं; **इदम्**=इस; **कृत्स्नम्**=सम्पूर्ण; **एकांशेन**=एक अंशमात्र से; **स्थितः**=स्थित (हूँ); **जगत्**=जगत् को।

अनुवाद

अथवा हे अर्जुन ! इस बहुत जानने से तेरा क्या प्रयोजन है ? तू केवल इतना जान ले कि अपने एक अंशमात्र से इस सम्पूर्ण जगत् को धारण करके मैं इसमें व्याप्त हो रहा हूँ।।४२।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् परमात्मारूप से सब सत्त्वों में प्रवेश करके सम्पूर्ण प्राकृत-सृष्टि में व्याप्त हो रहे हैं। यहाँ वे अर्जुन से कहते हैं कि नाना वस्तुओं के ऐश्वर्य और उत्कर्ष को अलग-अलग जानने का कोई अर्थ नहीं है। उसके लिए केवल इतना जान लेना पर्याप्त होगा कि सम्पूर्ण पदार्थों की सत्ता इसीलिए है कि श्रीकृष्ण ने उन सब में परमात्मारूप से प्रवेश किया है। उसे जानना चाहिए कि सब से बड़े जीव, ब्रह्मा से लेकर तुच्छ चींटी तक सबके सब प्राणी जीवित हैं, क्योंकि उनमें से प्रत्येक में श्रीभगवान् का प्रवेश है; वे ही उन सबका पालन-पोषण कर रहे हैं।

इस श्लोक से सिद्ध हो जाता है कि देवताओं की उपासना करना योग्य नहीं है, क्योंकि ब्रह्मा, शिव आदि देवताओं में श्रीभगवान् के ऐश्वर्य का केवल एक अंश है। श्रीभगवान् सब के आदिकारण हैं, उनसे अधिक महिमामय दूसरा कोई नहीं है। वे असमोर्ध्व हैं, अर्थात् उनके समान कोई नहीं है, फिर बड़ा तो होगा ही क्यों कर। 'विष्णुमन्त्र' में कहा गया है कि श्रीभगवान् को ब्रह्मा और शिव आदि किसी देवता के समान माननेवाला उसी क्षण नास्तिक हो जाता है। परन्तु यदि श्रीकृष्ण की शक्ति के नाना ऐश्वर्यों और प्रकाशों की कथाओं का गम्भीर स्वाध्याय किया जाय, तो श्रीकृष्ण का तत्त्व निश्चित रूप से जानने में आ सकता है और परिणाम में मन भी श्रीकृष्ण की आराधना में अनन्य भाव से निवेशित हो सकता है। श्रीभगवान् का अंश-प्रकाश परमात्मा सब पदार्थों में प्रविष्ट है; इसलिए वे सर्वव्यापी हैं। अतः शुद्धभक्त पूर्ण